केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, संस्कृत मार्ग
बागसेवनिया, भोपाल- 462043

एवं

ज्योतिष विश्वकोश Reg.- 01/01/01/31137/16
ज्योतिष विश्वकोश App
(संचालित-पं. अवधनरेश पाण्डेय शिक्षा समिति)
81, आकाश नगर, कोटरा, भोपाल -462042

के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय अन्तराष्ट्रिय ज्योतिषशास्त्रीय शोधसङ्गोष्ठी (Online Webinar)

शोधविषय- वैवाहिक जीवन : समस्याएँ और समाधान
दिनांक - 16 से 18 फरवरी 2022

वैवाहिक जीवन : समस्यायें और समाधान

विषय परिचय-

भारतीय परंपरा के 16 संस्कारों में विवाह नामक संस्कार 15 वां संस्कार है। सनातन धर्म में पुरुषार्थ चतुष्टय का महत्त्वपूर्ण अंग काम भी विवाह से ही परिभाषित होता है। विवाह के द्वारा ही संपूर्ण भौतिक और गृहस्थ सुख की परिकल्पना की जा सकती है। मनुष्य में सामाजिक, पारिवारिक तथा चारित्रिक अनुशासन और संयम की स्थापना विवाह के द्वारा ही संभव है। आचार्यों ने 8 प्रकार के विवाह कहे हैं यथा- ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापात्यस्तथासुरः। गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽटमः।। म.स्मृ.3.21।। इनमें प्रारंभ के ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य (4 विवाह) ही प्रशस्त माने गये हैं। इनमें भी चतुर्थ प्राजापत्य महत्त्वपूर्ण है। इसमें पिता योग्य वर का चयन करके धर्माचरण व वंशवृद्धि के लिये कन्या का दान करता है यथा- इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सह या दीयतेऽर्थिने। स काय: पावयेत्तज्ज: षट्वश्यान्सहात्मना।। जीवन के महत्त्वपूर्ण संस्कार के समयानुसार संपादन एवं उसमें आने वाली समस्याओं का ज्योतिषीय अध्ययन हेतु इस शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

विवाह का महत्त्व-

विवाह भारतीय परंपरा का महत्त्वपूर्ण अंग है जिसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास व लाभ संभव है यथा-

(क)व्यक्तित्व की परिपूर्णता- हमारे आराध्य सदाशिव अर्द्धनारीश्वर रूप में प्रतिष्ठित हैं जिसका उद्देश्य ही यह है कि विवाह के बिना स्त्री या पुरुष का व्यक्तित्व परिपूर्ण नहीं है। जैसा कि स्कन्दपुराण का कथन है- नरो हि गृहिणी हीनो अर्द्धदेह इति स्मृत:।।1.2.3.62।। भविष्यपुराण

में भी कहा गया है- पुमानर्द्धपुमांस्तावत् यावद् भार्या न विन्दति। तस्मात् यथाक्रमं काले कुर्याद् दारपरिग्रहम्।।1.6.29।।

(ख)ऋणमोचन- देव, पितृ, मनुष्यादि ऋणों की निवृत्ति गृहस्थ जीवन के संभव नहीं है और गृहस्थी बिना विवाह के संभव नहीं अतएव आचार्यों ने सभी ऋणों से मुक्ति के लिये विवाह की अनिवार्यता स्पष्ट की है। यथा- अथात: सम्प्रवक्ष्यामि गृहस्थाश्रममुत्तमम्। य आधारोऽन्याश्रमाणां भूतानां प्राणिनां तथा।। ऋणत्रयच्छेदकारी धर्मकामार्थ सिद्धिदम्।

(ग)अर्थोत्पादन- पति या पत्नी के बिना धन कमाना या धन का उपभोग करना संभव नहीं है।

(घ) सामाजिक सम्मान- अविवाहित व्यक्ति को परिवार या समाज में कुछ अलग रूप से देखा जाता है। यह मानते हैं कि आचरण का संतुलन, व्यावहारिक संतुलन बिना विवाह के नहीं आयेगा और अविवाहित व्यक्ति इन संतुलनों से दूर है।

(च)कामोपयोग- विवाह का सर्वोपरि उद्देश्य आहार-निद्रा-भय के समान दुर्निवार वृत्ति काम का मर्यादित व लोकोपकारी उपभोग है। विवाह के बिना शारीरिक सम्पर्क सर्वथा निन्दित है अतएव विवाह परमावश्यक है।

ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि में वैवाहिक जीवन-

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्, ज्योतिषशास्त्र मनुष्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है इसमें कोई संदेह नहीं है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाली सभी घटनाओं का ज्ञान भी इसी शास्त्र के द्वारा होता है। उसी प्रकार विवाह और वैवाहिक जीवन दोनों का पूर्व ज्ञान ज्योतिषशास्त्र से पूर्णतया संभव है। जैसा कहा गया है कि-

भार्यात्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता, शीलं शुभं भवति लग्नेवशेन तस्या।

तस्माद् विवाहसमय: परिचिन्त्यते हि, तन्निघ्नतामुपगता: सुतशीलधर्मा:।।

फलित शास्त्र में विवाह और वैवाहिक जीवन के विचारणीय भावों के रूप में आचार्य जीवनाथ कहते हैं- सौभाग्यं सप्तमस्थाने वैधव्यं चाष्टमालये। अर्थात् सप्तम भाव से विवाह और अष्टम से वैधव्य/विधुर होने की परिस्थितियों का ज्ञान होता है। इसी प्रकार मंत्रेश्वर के अनुसार-

यद्यत्पुंप्रसवे क्षमं तदखिलं स्त्रीणां प्रिये वा वदेन्,

मांगल्यं निधनात् सुतांश्च नवमाल्लग्नात् तनोश्चारुताम्,

भर्तारं शुभगत्वमस्तभवनात् संगं सतीत्वं सुखात्,

सन्तस्तेषु शुभप्रदास्त्वशुभदा: क्रूरास्तदीशं विना।। फ.दी.11-1।।

अर्थात् स्त्री की कुण्डली से पति के आयुष्य का विचार अष्टम भाव से, संतान का नवम से, शारीरिक सुंदरता आदि का प्रथम से, पति के गुण-आकृति आदि का सप्तम से, सतीत्व का विचार चतुर्थ से करना चाहिये। इनमें शुभग्रहों का प्रभाव अनुकूल फल देने वाला और पापग्रहों का प्रभाव प्रतिकूल फल देने वाला होता है। इस प्रकार फलित में सूक्ष्मता के साथ वैवाहिक जीवन का विचार किया गया है।

वैवाहिक जीवन में होने वाली समस्यायें-

सर्वविदित है कि विवाह में परस्पर सामंजस्य के अभाव में वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है। आज भारत में नहीं अपितु पूरे विश्व में यह समस्या महामारी के रूप में फैल रही है। इसी प्रकार विवाह में विलम्ब, विवाह सम्बन्ध में प्रेम का अभाव, वैवाहिक जीवन में निष्ठा का अभाव, वैवाहिक सम्बन्धों का विघटन, वैधव्य/विधुर आदि समस्यायें व्यापक रूप से दृष्टिगोचर हो रही हैं। आज के दौर में मनुष्य शिक्षित तो हो रहा है परन्तु आचरण से दूर होता जा रहा है, सहनशीलता, चारित्रिक विश्वसनीयता का अभाव बढता जा रहा है। सर्वे के अनुसार केवल कोरोना के लॉकडाउन में 20% घरेलू हिंसा की घटनायें सामने आयी हैं। इन सभी समस्याओं के अध्ययन में ज्योतिषशास्त्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इस शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

वैवाहिक जीवन में होने वाली समस्याओं का समाधान-

ज्योतिषशास्त्र में विवाह के चिंतन काल से ही विविध योग बताये गये हैं जिससे वैवाहिक जीवन में जीवनसाथी का चयन, विवाह की दिशा का ज्ञान, विवाह काल का ज्ञान, वैवाहिक जीवन में होने वाली समस्याओं का ज्ञान व समाधान प्राप्त हो सकता है। विवाह के बाद होने वाली विविध समस्याओं का समाधान भी आचार्यों ने सुस्पष्ट किया है यथा-

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूतपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।मु०चि०6-7।।

इस प्रकार अनेकानेक समाधानों का ज्ञान हमें प्राप्त हो सके तदर्थ यह शोध संगोष्ठी आयोजित की जा रही है।